पंचम अध्याय

'प्रिय शबनम' : वातावरण

पंचम अध्याय

'प्रिय शकुनम ।' : वातावरण --

५:१: देश काल तथा वातावरण का स्वरूप --

देश काल से तात्पर्य है उसमें वर्णित आचार-विचार, रीति-रिवाज, रहन-सहन और परिस्थिति आदि से। उपन्यासों में स्वाभाविकता और सजीवता का आभास देने के लिए देश काल तथा वातावरण का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। प्रत्येक पात्र और उसका कार्य किसी विशिष्ट देश, समय और वातावरण में होता है। अत: उपन्यास की पूर्णता के लिए इन सबका वर्णन आवश्यक है। देश काल तथा वातावरण के अन्तर्गत आचार-विचार, वातावरण, रीति-रिवाज, रहन-सहन और राजनीतिक तथा सामाजिक आदि परिस्थितियों का वर्णन आता है। सामाजिक उपन्यासों में विभिन्न समस्याओं के चित्रण का अवसर रहता है। इन सब समस्याओं का चित्रण करते हुए भी उपन्यासकार को पात्रों की और घटनाओं के घटित होने की परिस्थिति, काल और वातावरण का चित्रण करना पड़ता है।

प्राकृतिक दृश्य और वातावरण का चित्रण उपन्यास में ही होता है, कुछ उपन्यासों में यह चित्रण बहुत विस्तृत होता है जो कुछ उपन्यासों में अत्यन्त संक्षिप्त होता है। हमारे विचार में स्थानीय दृश्यों का चित्रण उपन्यासों में अनिवार्य तो अवश्य है, किन्तु न तो बहुत विस्तृत होना चाहिए और न बहुत संक्षिप्त ही। देश काल तथा वातावरण का वर्णन वहाँ तक उचित होता है जहाँ तक कि वे कथा प्रवाह में सहायक हो।

५:२ देश-काल के गुण :

५:२:१ वर्णनात्मक सूक्ष्मता --

वर्णन की सूक्ष्मता काल और वातावरण के साथ प्रत्येक प्रकार से अनिवार्य रूप में सम्बन्धित होता है क्यों कि यही वह तत्व है जो पाठक के सामने युग और काल विशेष का सजीव चित्रण अंकित कर सकता है ।

५:२:२ विश्वसनीय कल्पनात्मकता --

उपन्यासकार कल्पना द्वारा एक नये संसार की सृष्टि करता है । कला पूर्ण सफल तभी हो सकती है जब वह काल्पनिक होते हुए भी सचाई का बोध कराये । संतुलित, मर्यादित और आनुपातिक रूप में कल्पना तत्व का समावेश उपन्यास के इस उपकरण का एक आवश्यक गुण होता है ।

५:२:३ उपकरणात्मक संतुलन --

देश-काल और वातावरण चित्रण का तीसरा उल्लेखनीय गुण उसका उपकरणात्मक संतुलन है । उपन्यास के मूल आकार को ध्यान में रखते हुए वातावरण और चित्रण का उपकरणात्मक संतुलन होना आवश्यक है ।

५:३ देश-काल के भेद --

देश-काल को प्राय: वातावरण का बाह्य रूप कहा जाता है । देश-काल अथवा वातावरण चित्रण के बाह्य रूपात्मक भेद, संक्षेप में निम्नलिखित होते हैं ।

५:३:१ सामाजिक वातावरण --

सामाजिक दशा का यथार्थ चित्रण इसके अन्तर्गत आता है । जैसे सामाजिक जीवन से सम्बन्ध रखनेवाले सभी वर्णन वेष-भूषा, भाषा, रीति-रिवाज, सामाजिक वर्ग, शिक्षा, संस्कृति, सामाजिक व्यापार आदि ।

५:३:२ तिलिस्मी एवं जासूसी वातावरण --

तिलिस्मी उपन्यास नितान्त काल्पनिक होते हैं । उनका वातावरण निर्माण बहुत कुछ इसी प्रकार के फारसी के किस्सों के आधार पर किया जाता है । अक्सर इन

उपन्यासों के वातावरण में रोमान्टिक तत्वों का अधिक समावेश करने के लिए ऐतिहासिक तत्वों का सहारा लेना पडता है ।

५:३:३ प्राकृतिकवातावरण --

उपन्यासकार अपनी कथा में नियोजित पात्रों के सुख-दु:ख के साथ प्रकृति की समता-विषमता को बडे नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करता है । प्राकृतिक वातावरण के अन्तर्गत लेखक प्रकृति के अन्तर्गत आनेवाली प्राय: सभी वस्तुओं का चित्रण करता है ।

५:३:४ भौगोलिक वातावरण --

किसी भी उपन्यास की कथा का क्षेत्र अनिवार्य रूप से किसी-न-किसी प्रदेश से सम्बन्धित रहता है । ऐसी स्थिति में यदि उपन्यासकार संक्षिप्त भौगोलिक विवरण उपस्थित करके उसकी यथार्थता में वृध्दि कर देता है,तो वह कथा अधिक विश्वसनीय हो जाती है ।

५:३:५ राजनीतिक वातावरण --

राजनीतिक उपन्यासों का वातावरण मुख्यत: राजनीतिक घटनाओं और राजनीतिक चरित्रों के आधारपर बनता है ।

५:३:६ ऐतिहासिक वातावरण --

ऐतिहासिक उपन्यासों के देश-काल वातावरण इसके चित्रण की आवश्यकता होती है । कल्पनात्मकता के लिए विशिष्ट स्थान रखता हुआ उपन्यासकार ऐतिहासिक वातावरण की निर्मिति करता है ।

५:४ देश-काल और स्थानीय रंग --

स्थानीय रंग से सामान्यत: ' लोकल कलर ' का तात्पर्य समझा जाता है । स्थानीय रंग के कारण उपन्यास की प्रभावात्मकता बढ़ जाती है तथा कृत्रिमता घटकर स्वाभाविकता आ जाती है । स्थानीय रंग ऐतिहासिक,सामाजिक तथा राजनीतिक वातावरण प्रधान उपन्यासों में समान रूप से महत्व रखता है । स्थानीय रंग चित्रण

गाँव,शहर-विशेष,प्रकृति,जाति-विशेष,रीति-रिवाज,पहनावा आदि से सम्बन्धित हो सकता है। स्थानीय रंगों का गहरा पूट उस कथानक की काल्पनिकता को भी वास्तविकता के स्तर पर ले आता है। चाहे वह कथानक पूर्णत: काल्पनिक ही क्यों न हो।

५:५:१ 'प्रिय शबनम' में देश,काल तथा वातावरण - देवेश ठाकुर द्वारा लिखित 'प्रिय शबनम' उपन्यास में दो प्रकार का वातावरण हुआ है बाहरी वातावरण तथा मानसिक वातावरण।

५:५:१ बाहरी वातावरण --

५:५:१:१ महानगरीय वातावरण --

लेखकने 'प्रिय शबनम' उपन्यास में बम्बई महानगर का चित्रण सूक्ष्मता से किया है। उपन्यास का पूरा कथानक इसी महानगर में घटीत होता है। महानगर के उच्च वर्ग, मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग के चित्रण में वर्णनात्मक सूक्ष्मता दिखाई देती है। परन्तु लेखकने मध्यवर्ग को अपने कथानक का विषय बनाया है। इस मध्यवर्ग को महानगर में किस तरह जिना पडता है,किस तरह समस्याओं का सामना करना पडता है इसी का चित्रण किया है। बाहर से आये लोगों की स्थिति इस नगर में दयनीय हो जाती है। महानगर में कॉलेज,मध्यवर्ग,उच्चवर्ग,वसई की बस्तियाँ,वरसोवा का सागर तट,तथा होटलों का चित्रण लेखकने महानगरीय वातावरण के अन्तर्गत किया है।' प्रिय शबनम' सामाजिक उपन्यास है, कोटद्वार में रहनेवाला मंगल मध्यवर्ग का युवक है बम्बई में नौकरी के लिए आता है। उसके गाँव का एक लडका बच्चन वसई के कमरे में रहता है। वसई के उस चाल को देखकर मंगल कहता है -" एक चाल थी वह। दस-ग्यारह खोलियों की एक लम्बी कतार। लगभग अँधेरी खोलियाँ। खोलियों के बाहर कीचड और गन्दगी बदबू का भभका।" [१]

बम्बई में कमरा मुश्किल से मिलता जरूर है लेकिन पानी तथा अन्य जीवनावश्यक वस्तुओं के लिए रात-दिन भाग दौड करनी पडती है। मंगल कहता है -- " बच्चन की भाग-दौड से मुझे भी पास की दूसरी चाल में एक खोली मिल गयी।

गनीमत थी कि नल खोली के भीतर ही था, नहीं तो रात के दो-दो बजे उठकर बाल्टी-भर पानी के लिए क्यू में खड़ा होना पड़ता... ।" [२]

महानगरीय वातावरण के अन्तर्गत लेखकने सर्वहारा वर्ग के लोगों का बरसोवा के कोलीवाडा मछुआरों की बस्तियों का चित्र यथार्थ रूप में खिंचा है। लेखक के शब्दों में --" अज्ञान का अँधेरा, शोषण और अंध:विश्वास का अँधेरा। परिणामस्वरूप शराब में डूबे हुए, तस्करी और सस्ती ऐयाशी में फँसे हुए। झोपडी के बाहर फैले हुए ताश के पत्ते। बात-बातमें मार-पीट। खाली बोतले .... रोजरोज फूटते हुए सिर।" [३]

बस्तियों के वातावरण साथ-साथ लेखकने उच्चवर्ग के बडे फ्लैट के वातावरण का भी चित्रण किया है। मंगल की चहेती शबनम के घर में दो आदमी रहते हैं। उनकी घर की रौनक देखने योग्य है। जैसे --" हॉल की पेंटिग्ज, कमरों की सज्जा और सफाई, फर्नीचर... दीवारों पर बेल, बूटेवाले चमकीले टाइल्स और फर्शपर शफ्फाक संगमरमर।" [४]

५:५:१:२ आवास --

महानगर में सबसे बडी समस्या आवास ही है। मंगल एक अध्यापक है। बम्बई आनेपर आवास की समस्या उसे सताति है। वसई की एक चाल में एक कमरा मिलता है जिसमें हमेशा अँधेरा रहता है, उसके बाहर कीचड तथा गन्दगी रहती है। कोलीवाडा में भी यही हालत है लोग किडों की तरह रेंगते हुये वहाँ दिखाई देते है। मंगल तीन सालों से खोली में रहता क्यों कि रहने की सुविधा देखता तो बम्बई जैसे महानगर में खाली पेट रहना पडता। मंगल कहता है --" बम्बई में - शहर में आकर रहने की मैं तब सोच भी नहीं सकता था। इतनी पगडी, इतना ज्यादा किराया। अगर रहने की सुविधा देखता, तो फिर पेट खाली रखना पडता।" [५]

लेखक ने आवास की कमतरता के साथ उच्चवर्ग के लोगों में आवास की अधिकता चित्रित की है। जिसमें दो लोग रहते हैं। एक फ्लैट होते हुये दूसरा फ्लैट

लेने की सोचते है । ये लोग घरके के प्रत्येक सदस्य के लिए अलग-अलग कमरें बनवाते हैं । मंगल शबनम के घर के वातावरण को प्रस्तुत करते वक्त कहता है --" तुम और तुम्हारे डैडी दो व्यक्तियों का परिवार और इतना बडा फ्लैट । तुम्हारा बेडरूम डैडी का बेडरूम,तुम्हारी स्टडी ,डैडी की स्टडी ,मेहमानों का कमरा,नौकरों के दो कमरे,स्टोर रूम,इतना बडा हॉल, कितने सारे बाथ रूम ।" [६]

५:५:१:३ यातायात --

बम्बई महानगर में दूर से नौकरी पर आना जाना मुश्किल काम होता है । सुबह से लेकर शाम तक नौकर वर्ग बाहर ही रहता है क्यों कि ऑफीस के लिए जितना समय लगता है उतना ही समय आने-जाने पर लगता है । बम्बई के तेज जीवन में आदमी को समय के साथ चलना पडता है । मंगल भी वसई से सैंट थामस कॉलेज रेल से जाता-आता है । शबनम के पूछने पर मंगल कहता है --" मैं लेट हो गया था । गाडियाँ समय से नहीं चल रही थी । बरसात के दिनों में वसई से आना अपने आपमें एक साधना है । और जब तुमने (शबनम) जाना कि मैं वसई से आता हूँ तो तुमने मुँह बनाकर कहा था,' सर,आप तो दूर रहते है । बड़ी मुश्किल होती होगी आपको ?" [७]

५:५:१:४ होटल-क्लब संस्कृति --

महानगर में आजकल होटल,क्लब बढ़ते जा रहे हैं,जिसमें अनेक किस्म के लोग-आते जाते हैं । लेखक ने इस उपन्यास में भी महानगरीय वातावरण के अन्तर्गत अनेक होटलों का नाम निर्देश किया है । साथ ही वहाँ के वातावरण को सूक्ष्मता से चित्रित किया है । मंगल और शबनम प्रेमी युगल होटल ' समोवार' में हमेशा मिलते हैं,बातें करते हैं । दूसरा होटल है चर्चगेट पर'वोल्गा ' । शबनम एक बार मंगल को वहाँ लेकर जाती है । मंगल पहली बार एयर कंडीशंड रेस्तराँ में गया है । उसकी अवस्था वहाँ बहुत ही औपचारिक हो गयी है वह वहाँ खाऊँ-न-खाऊँ की स्थिति में फँसकर रह जाता है ।

शबनम से सम्बन्ध विच्छेद होनेपर मंगल फिर एक बार ' समोवार ' में जाता है । जहाँ उन दोनों ने बैठकर अपने भविष्य का नक्शा खिंचा था । दस बरस

बाद वह वहाँ गया है मगर 'समोवार' का वातावरण वही है, जैसे -" वही बेंत की कुर्सियाँ वही लालटेन के भीतर टँगे हुए बल्ब,वही तख्ती पर लिखा हुआ मीनू,' लगभग वही बेयरे ,वही दुबली पतली सी मालकिन,इधर से उधर तक झापटकर जाती हुई,चेहरे पर तौलकर चिपकाई हुई मुसकान और म्यूजियम की तरफ रखे हुए गमले और उससे लगी हुई हरियाली ।" ८

होटल 'क्वालिटी' ,'सी व्यू' आदि में अपने नाम के शेयर लोग लेते हैं । अयाशी लड़के-लड़कियाँ ऐसे होटल में ज्यादा समय बिताते हैं । एक उच्छृंखल लड़की शम्मूदा के साथ प्यार का नाटक करती है । शम्मूदा के सामने आती है तो सामान्य, शालीन लगती है मगर शम्मूदा उसका असली रूप 'सी व्यू बार' में देखते हैं --" विजया घोषाल अपने ऐयाश दोस्तों के साथ नशे में धुत्त थी .. ड्रिंक्स चल रहीथी और अँग्रेजी धुनों के बीच पता नहीं किन-किन बातों को लेकर शोर-शराबा मचा हुआ था ।" ९ इस प्रकार होटल क्लब में पाश्चात्य संस्कृति ने प्रवेश कर दिया है । इस का यथार्थ वातावरण लेखक ने निर्माण किया है ।

५:५:१:५ अर्थ केन्द्रित रिश्ते --

आज के जीवन में पैसा आदमी को इज्जत दिलाता है ,पैसा ही सबकुछ माना जा रहा है । आपसी रिश्ते में भी यही हालत है । लाजो मंगल के पास कुछ अपेक्षाएँ लेकर आती है,उसे लगता है मंगल एक प्रोफेसर है और उसके साथ रहने से वह चैन तथा आराम की जिन्दगी जियेगी । किन्तु अपना भ्रम टूटते हुए देखकर वह मंगल को छोड़ जाती है ।

शम्मूदा एक देशभक्त,क्रान्तिकारी थे । जमीनदार के बेटे थे, मगर पैसों से मोह न होने कारण उनकी पत्नी गाँव के दोस्त के साथ भाग जाती है । रिश्तेदारों ने जायदाद हड़पली । अर्थ केन्द्रित रिश्ते शम्मूदा को गहरी चोट पहुँचाते हैं । लाजो भी पैसों के कारण मंगल से रिश्ता भूलकर उसे ब्लैकमेलिंग करती है । वह अपनी बेटी आस्था की मौसी बनती है । अर्थकेन्द्रित रिश्ते बढ़ते जा रहे हैं । पैसा आदमी-आदमी के बीच की आत्मीयता,अपना पन कम कर रहा है । यही अर्थकेन्द्रित रिश्ते का वातावरण लेखक ने बड़ी बेखूबी से किया है ।

५:५:१:६ मध्यवर्गीय वातावरण --

लेखकने उपन्यास में मध्यवर्ग के लोगों के संस्कार,परिवेश,मानसिकवृत्ति आदि का चित्रण किया है। सम्पूर्ण कथानक में मंगल के मध्यवर्गीय संस्कार,उसका परिवेश, हीनता बोध,उसकी कुण्ठाग्रस्त स्थिति आदि को बार-बार कहने का लेखक ने प्रयास किया है। मध्यवर्ग के लोग बस्ती में रहकर ऊँचे सपने देखते हैं। गृह-कलह के उदाहरण मध्यवर्ग में ज्यादा मिलते हैं। उनकी अपेक्षाएँ बड़ी होती हैं। मध्यवर्ग की लाजो सिनेमा,होटल,कपडे ,सैर आदि ही चाहती है। उसकी रहन-सहन घृणा पैदा करती है। सिगडी सुलगाने के लिए अच्छे पुस्तक के कागज लेना,मुन्नी को साफ करने के लिए ताजा अखबार का उपयोग करना। मंगल के डाटने पर कहती है --"रोज तो पढते हैं। आज नहीं पढोंगे,तो क्या हो जायेगा अब तक कौन-से तीर मार लिये है पढकर।"[१०] बरामदे में बालों को छितराकर चिल्ला-चिल्लाकर मंगल को कोसना, ये हरकते मध्यवर्गीय वातावरण की निर्मिति में सहायक हुए है।

मंगल की माँ का भी व्यवहार लाजो जैसा ही है। वह कहता है "अम्मा से जुड़ी हुई आत्मीयता गंदगी और बदबू में बदल गयी। न मैं अच्छा अध्यापक ही बन सका , न अच्छा कार्यकर्ता।"[११] मूलचंद भी मध्यवर्ग का पात्र है जिसके विचार भी घृणा निर्माण करते हैं। जैसा लाजो का मंगल के साथ रहना ,होटल के खाने के रूप में तथा आस्था को होटल का बील मानना आदि। बस्ती में रहनेवाले लोग भी अज्ञानी,शोषित हैं। अंध:विश्वासी है। शराब पीकर,सस्ती ऐयाशी करते हैं। ताश के पत्ते खेलते हैं ,झगडते हैं। आदि का चित्रण आँखों के सामने मूर्त होता है।

मध्यवर्ग के आर्थिक जीवन परिचय भी लेखक ने प्रस्तुत किया है। लाजो की बेटी का मरना,उसका एक उदाहरण है। कपडे,दवाई,राशन आदि की वहाँ हमेशा कमी रहती है। ये लोग जब पैसा कमाते हैं तब संचय नहीं करते और बुढापे में दूसरों की दयापर रहना पडता है। लाजो के खर्चीले स्वभाव से तंग आकर मंगल कहता है - "सात-आठ सौ रुपये में तुम बस खा-पी सकते हो, मौज मजे नहीं कर सकते।"[१२]

लाजो की माँगे बढ़नेपर उसका पति मूलचंद मंगल को ब्लैकमिल करता है। पैसों के आगे वह मंगल और लाजो के सम्बन्ध को महत्त्व नहीं देता है। और मंगल के पास पैसे मांगने आता है --"मास्साब,बिल्कुल मजबुरी से आया हूँ। या यो कहूँ, भेजा गया हूँ। पाँच साल हो गये है, अभी टेम्परेरी में हूँ। साढे तीन सौ पगार मिलती है। चलता नहीं है, साब। अगर तुम्हारी तरफ से माव्वारी मुझे मदद हो जाये तो .... ।" [१३] इस प्रकार लेखक ने मध्यवर्ग के आर्थिक जीवन तथा वातावरण का चित्रण किया है।

५:५:१:७ पारिवारिक वातावरण --

पारिवारिक वातावरण के अन्तर्गत लेखक ने शबनम और उसके पिताजी के माध्यम से (आदर्श परिवार का वातावरण) प्रस्तुत किया है। शबनम के पिताजी शबनम को बहुत प्यार करते है ,उसको पढाते है,उसके लिए घरपर ही सभी सुविधायें लाते है और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने उसे कभी माँ की कमी महसूस नहीं होने दी। शबनम भी अपने पिताजी से प्यार करती है,शादी होने के बाद भी पिताजी के पास रहना चाहती है ताकि उन्हें कोई कष्ट न हो।

दूसरा परिवार है कोटद्वार का मंगल के माता-पिता का, जो एक दूसरे से दूर रहते हैं, पिताजी शराब पिकर मंगल की माँसे छिना झिपटी करके पैसा ले जाते है ऐसे वातावरण के कारण मंगल की बहन सुक्खी लाजो के माई के साथ भाग जाती है।

तिसरा परिवार है शम्मूदा का,उसका तो पूरा परिवार ही टूट चुका है। पत्नी उनके गाँव के मित्र के साथ भाग जाती है। घर और जायदाद रिश्तेदार हड़प लेते हैं। शम्मूदा बम्बई में अकेले ही रहते हैं।

पारिवारिक वातावरण के अन्तर्गत महत्वपूर्ण वातावरण निर्मिती करनेवाला कुटुम्ब है मंगल का,जिसमें हमेशा महाभारत (गृह-कलह) चलता रहता है। मंगल की माँ इस बात से डरती है कि अपनी कहानी फिर अपने घर में दोहराई न जाये इसीलिए लाजो को घर से निकालने के लिए हमेशा झागडती रहती है। और लाजो

अपने ऊपर किसी का अधिकार नही सहती । एक-दूसरी को गन्दी-गन्दी गालियाँ देना, किवाड़ों को ज़ोर के साथ खोलना, बंद करना, तीखे व्यंग्य, ऊँची चिल्लाहट, बड़बड़ाहट, मार-पीट ये हरकते हमेशा चलती हैं । मंगल अप्रत्याशित घटनाओं को देखकर कहता है --"मुझमें माँ के साथ भी बौखलाहट होती और लाजो के साथ भी । यह भी जिन्दगी है क्या ? कूड़े और गन्दगी के ढ़ेर पर पड़ी हुई एक लावारिस लाश । जिस पर हर गली का कुत्ता पेशाब कर जाता है .... एक आदमी इतना विवश जीवन भी जी सकता है क्या ?" १४

एक बार अम्मा और लाजो में जोरों की लड़ाई होती है और अम्मा केरोसिन की बोतल लाजो के सिर मारती हैं । लाजो को अस्पताल भरति किया गया था । तब मंगल को अपना घर अस्त-व्यस्त, मुर्दनी छाया हुआ लगता है । अम्मा के चली जाने के बाद भी मंगल और लाजों में यही गृह-कलह का वातावरण चलता रहा है । इस प्रकार इस वातावरण में जो भी घटता है वह अप्रत्यशित होता है । इसीलिए यह वातावरण हमारी उत्सुकता को बढ़ाये रखता है ।

और एक पारिवारिक वातावरण हमें शबनम और उसके पिता जैसा मंगल के घर में अन्त में देखने को मिलता है । लाजो मंगल को छोड़ जाती है । तब मंगल बच्ची आस्था को ममतामयी प्यार देता है वहाँ का स्नेहशील वातावरण हमें भा जाता है । हममें स्नेह की भावना जगाता है । मंगल अन्त में निर्णय लेता है -- "और तब मैंने निर्णय लिया था, शबनम कि अब और नहीं भटकूँगा । अपनी प्यारी सी बच्ची है । बाप-बेटी दोनों मिलकर एक साफ सुथरी जिन्दगी जीयेंगे .... इन पराजित दिनों की यही एक उपलब्धि है । मैं, सच कहूँ, इसे बहुत सहेजकर रखना चाहता हूँ ।" १५

५:५:१:८ कस्बे का वातावरण --

कथानक महानगरीय वातावरण में घटता है परन्तु स्मृति के रूप में बीच-बीच में लेखकने कोटद्वार के कस्बे, पहाड़, आदि का चित्रण किया है । नायक मंगल का मन बार-बार उचटकर अपने गाँव कोटद्वार चला जाता है । कोटद्वार के

वातावरण में लेखकने वर्णनात्मक सूक्ष्मता को महत्त्व दिया है। मंगल जब बम्बई आता है तो उसे कोटद्वार का घर,बाहर का चबुतरा,आँगन,नीम का पेड,गर्मियों के दिनों उसमें खाट डालकर बैठना आदि बार बार याद आता है। इसे पढ़ते वक्त हम भी देहात की सैर करके आते हैं। लैंसडाऊन का वर्णन यहाँ कलात्मक ढंग से चित्रित हुआ है। मंगल जब शबनम के घर चाय पी रहा होता है परन्तु उसका मन कोटद्वार चला गया है ,जैसे --" लेकिन मेरा मन भटककर कोटद्वार के अपने पुराने घर की दीवारों से लिपटा जा रहा था। आँगन में खिली हुई तुलसी की झाडियाँ। नीम का पेड। छोटी-छोटी ईन्टों का चबुतरा। तुलसी की गन्ध - वाली चाय। माँ का शीतलपाटी पर बैठकर रामायण बाँचना और पीतल का गिलास।"[१६]

५:५:१:९ पार्टी का वातावरण --

लेखकने उपन्यास में मध्यवर्ग,मध्यवर्ग की समस्याएँ,मध्यवर्ग के कॉम्पलैक्स आदि समस्याओं को चित्रित किया है और इन समस्याओं को सुलझाने के लिए पार्टी का वातावरण निर्माण किया है। इस पार्टी में समर्पित व्यक्तित्व है शम्मूदा। दूसरे सिरेपर है नायक मंगल जो मात्र कार्यकर्त्ता है। पार्टी का वातावरण उपन्यास में शुरु से लेकर अन्ततक चलता है। कथानक में बार-बार पार्टी का उल्लेख किया गया है। पार्टी की नजरों में उठने के लिए मंगल शबनम को त्यागना जरूरी समझाता है उसी वक्त लगता है कि वह सच्चा कार्यकर्ता है परन्तु लाजो के सम्बन्ध को लेकर सोचते है तो उसका यह स्वांग स्पष्ट होता है।

वरसोवा के पास कोलीवाडा की बस्ती में मंगल कार्य करता है तो कोलीवाडा का चित्र तथा पार्टी का काम आँखों के सामने मूर्त होता है। पार्टी के कारण देश के कोने-कोने में विस्फोट होने की बात,शोषण,अन्याय, अत्याचार,भ्रष्टाचार के खिलाफ लढना ,कार्यकर्ताओं का जेल जाना, आदि बातें पार्टी के वातावरण के पुष्ठ बनाती है। साथ में एक पार्टी द्वारा दूसरी पार्टी

के कार्यकर्ताओं का लड़कियों के जाल में फँसाकर जासूसी करना, पार्टी के कार्यकर्ताओं को प्यार की सुविधा नहीं होती है। जैसे --"बेटे, पार्टी और रोमान्स साथ-साथ नहीं चलते। पार्टी मैन सबका होता है। सबके सामने उसको जवाब देना होता है और इसके लिए उसका दूरदृष्टि से सम्पन्न होना आवश्यक है।" १७

पार्टी मैन की संवेदना, कुण्ठा अपने लिए न होकर उन लोगों के लिए है, जो स्वतंत्र देश में जिने के लिए रात-दिन संघर्ष करते रहते है। मार्क्सवाद और फ्रायडवाद साथ-साथ नहीं चलते ऐसे उध्दरण पार्टी के वातावरण निर्माण में मत्त्वपूर्ण हैं। शम्भूदा और मंगल में सच्चे कार्यकर्ता शम्भूदा है यह मंगल भी मानता है --"हिमस्नान हिमालय की ऊँचाइयों से होड लेता उनका निष्कलंक व्यक्तित्व - अपने परिवेश के लिए पूर्ण समर्पित। और कहाँ मैं - अनेक-अनेक कुण्ठाओं विकृत आकांक्षाओं और लाभों से भरा हुआ पोखर।" १८

पार्टी के वातावरण निर्मिति में महत्त्वपूर्ण पात्र है शम्भूदा तथा उनकी वाणी का प्रभूत्व। समतावादी आदर्श की स्थापना करने का उद्देश्य रखते हैं और व्यक्ति - व्यक्ति के बीच का वैषम्य कम करना चाहते हैं। उनके एक भाषण का अंश देखिए --"अपने प्रति ईमानदार व्यक्ति ही जनता और समाज की सेवा के काबिल और उनके प्रति ईमानदार हो सकता है।" १९

५:५:१:१० <u>प्रकृति चित्रण</u> --

लेखकने बम्बई महानगर की तुलना में कोटद्वार के लैंसडाऊन का वर्णन अधिक किया है। कोटद्वार के प्रकृति चित्रण का वर्णन चित्रात्मक ढंग से किया है। महानगरीय चित्रण कहीं कहीं चलताऊ ढंग से संकेत मात्र किया है लेकिन लैंसडाऊन के वर्णन की तुलना में बम्बई का वर्णन काफी फीका और अपर्याप्त प्रतीत होता है। जैसे लैंसडाऊन का एक दृश्य देखिए --"लैंसडाऊन घास की हरी थाली पर सूरजमुखी के द्वीप-सा लैंसडाऊन। बचपन के हम जोलियों के साथ कितनी ही बार गया था वहाँ। अभावों और उपेक्षाओं के बीच भी प्रकृति मुझे बड़ा सुख दे जाती थी। वर्षा की छाया में भीगी-नहाती हुई वनाली। सूरज के उगने से लेकर सूरज

के डूबने तक लगातार बहने वाली नदी । मौसम और समय के साथ-साथ बदलते हुए उसके रंग और आकार । शीशम और सैर के जंगलों मे कुहराती सुबहें । मन्दिरों में बजनेवाली सुबह-शाम की घंटिया । हम बच्चों का किसी छोटी-सी बात पर खुलकर हँसना और हँसते-हँसते पेट पकड लेना । जंगलों में पायताने हरियाली के टुकडे और वहाँ चरते हुए पशु । ग्वालों का बाँसुरी पर कोई राग छेडना । कितनी मीठी होती थी उनकी भाषा । उनके गीत कितने मर्मस्पर्शी होते थे । कितने वास्तविक होते थे उन गीतों के अर्थ-परिवेश की सारी गम्भीरता को अपने में ओढे हुए ।

लीचियों और खुमानियों के जंगल । डालियाँ फलों के भार से झुकी हुई । कितनी बार उस वातावरण के बीच में स्वर्ग के सुखों में खोया हूँ, इसका कोई हिसाब नहीं है, शबनम ।" [२०]

इस सबकी तुलना में बम्बई अपने नैसर्गिक रूप में कहीं नहीं आती । जब कि बम्बई ही कथानक की मुख्य कार्यस्थली है बम्बई के वातावरण का उल्लेख मात्र आया है । लेखक ने बम्बई जैसे महानगर के शोर-शराबें से अलग वरसोवा के रात सागर तट का चित्रण किया है । जैसे --"सुबह सागर की छाती पर छाए हुए धुँधलके को धीरे-धीरे प्रकाश में बदलते देखना । कितना आल्लादकारी होता था वह क्षण । किनारे-किनारे लम्बी चहलक्दमी । सुबह की हवा । अलग - अलग प्रहरों में बदलता हुआ समुद्र । डूबता हुआ सूर्य । वरसोवा के इस छोर पर,जहाँ नारियलों का कुंज है, अहिस्ता,अहिस्ता उतरती हुई साँझ । फिर धुंधलके की एक हल्की-सी सतह उभरती हुई ... । और बढता हुआ अन्धकार.... महानगर के शोर - शराबे से अलग .. मुझे कितना अच्छा लगता था वहाँ .... ।" [२१]

मंगल का मन बम्बई महानगर से शुरु में कोटद्वार की ओर भागता है और कोटद्वार के पहाडों में बिताये बचपन के दिन की यादे आती हैं । कोटद्वार के पहाड,जंगल ,नदी-नाले,निर्झर सभी लेखक को सुहावने लगते थे । बादल के टुकडे आकर रोंमाचित तथा आल्लादकारी सुख देते हैं । उदासी के वातावरण में भी

प्रकृति को वह चाहता है और जब वह प्रकृति की ओर देखता है तो उसकी उदासी भाग जाती है। वह शबनम को कहता है --"वर्षान्त के दिनों में,तुमने कभी महसूस किया है शबनम। कि तुम कमरे में बैठी हो और दरवाजे बन्द है कि अचानक भूले-भटके बादल के टुकड़े रोशनदानों से आकर तुम्हारे कमरे की छाया को गहरा देते हैं। धीरे से तुम्हारे कमरे में छा गया यह धुँधलका तुम्हें रोमांचित कर देता है।" [२२]

लेखक ने प्रतीकात्मक रूप में भी प्रकृति-चित्रण किया है। मंगल जब अपनी बची जिन्दगी में सूर्य के समान तपकर सर्वहारा के लिए काम करना चाहता है और यदि थोड़ासा भी कार्य कर सका तो उसे सुख होगा जिस तरह दिनभर तपते सूर्य को सन्ध्यासमय सन्तोष होता है। जैसे --"दिनभर तपता हुआ सूर्य जब संध्या के तट पर आकर गुलाबी हो उठता है,तो फिर सुख देने लगता है और कौन जानता है अस्त होने की बेला में अपने इस गुलाबीपन पर उसको भी बड़ा सन्तोष होता है।" [२३] इस प्रकार लेखक ने उपकरणात्मक सन्तुलन रखते हुये देश तथा काल का ध्यान रखकर प्रकृति चित्रण किया हैं।

५:५:२ <u>मानसिक वातावरण</u> --

५:५:२:१ <u>कुण्ठित मनोवृत्ति</u> --

उपन्यास में मानसिक वातावरण के अन्तर्गत नायक को कुण्ठित मनोवृत्ति, हीनता बोध आदि का चित्रण मिलता है। प्रथमत: मंगल थॉमस कॉलेज में एक अजनबी की तरह रहता है। प्रोफेसरों,लड़के - लड़कियों के सामने उसके मन में एक हीनता ग्रंथि रहती है। इनकी तुलना में वह अपने को बहुत सामान्य,बहुत हीन समझता है। वसई की तंग खोली में शबनम को वह नहीं बुलाता है। क्यों कि शबनम का परिवेश,वर्ग,घर,संस्कार,देह यह सब चौंधिया देनेवाले लगते हैं और उसके मन में हीनता का भाव निर्माण होता है। उसकी मानसिकता का वातावरण शबनम को ठुकराने के बाद दिखता है --"पिछले दस सालों से मैं लगातार अँधेरे कोनों में

भटक्ता रहा हूँ। तुम्हारे साथ की एक साफ-सुथरी और निश्चित जिन्दगी को मैंने अपनी कुण्ठाओं के बदले ठुकरा दिया।"[२४] तथा -"कुण्ठाओं की एक लम्बी परम्परा भी मेरे खून में पलती रही है और मैं अभी तक उससे मुक्त नहीं हो पाया हूँ।"[२५]

मंगल अपनी मानसिक्ता, हीनता को छोडना चाह्ता है, नहाना चाह्ता है। मगर नहाकर भी रहना उसी परिवेश में ही है। शरीर साफ होता है मगर मानसिक्ता तथा संस्कार नहीं साफ होते। मानसिक्ता को बदलना पुनर्जन्म लेना होता है। मंगल अपनी माँ का चरित्र सुनता है तो उसकी मानसिक्ता और बढ़ जाती है। यह वातावरण लेखक ने विश्वसनीय रूप में किया है। उसे लगता है वह किसी यतीमखाने में पैदा होता तो इतनी मानसिक्ता का सामना नहीं करना पडता। वह मान्य करता है कि शबनम को त्यागने और लाजो को अपनाने में उसकी मानसिक्ता ही मूलभूत कारण है।

५:५:२:२ द्विधा मन:स्थिति --

'प्रिय शबनम।' में लेखक ने मानसिक वातावरण में नायक मंगल की द्विधा मन:स्थिति का वातावरण इतना सजीवता के साथ चित्रित किया है कि उसमें हम भी नायक के साथ द्वन्द्व में पडते है कि वह शबनम को अपनाये या लाजो को। मंगल जब लाजो के परिवेश में जाता है तो वहाँ पारिवारिक्ता का सुख एवं अपनापन महसूस करता है। शबनम के सामने होना तो अपने योग्य पाता। मंगल की माँ के विचार शबनम से सम्बन्ध विच्छेद करने में उसे शक्ति देते हैं --"शबनम। माँ की बातों ने मुझे बडे पेशोवेश में डाल दिया था। जब मैं अपनी माँ को लेकर सोचता था तब लगता था माँ ठीक है और जब तुम्हे लेकर सोचता था, तब लगता था, तुम ठीक हो।"[२६]

लाजो के साथ उसके सम्बन्ध बढ़ जाते हैं वह उसके बच्चे की माँ बननेवाली है, यह सुनकर अन्त में वह एक निर्णय लेता है और फिर भी इसकी द्विधा मन:स्थिति का अन्त नहीं होता। उसे यह स्थिति अस्वस्थ कर देती है।

५:५:२:३ काल्पनिकता --

देवेश जी ने मंगल के अभावग्रस्त जीवन के साथ स्वप्नमय जीवन भी जोड दिया है। जिसमें वह अपना स्वप्न-संसार खड़ा करता है। जब मंगल के जीवन में शबनम आती है तो वह छोटे-बडे सपने देखता है - जिसमें सागर किनारे घर, कोटद्वार के पुराने घर की जगह हवेली,आंगन में संगमरमर,फूल-पौधे,आराम-कुर्सी आदि सपनों का संसार वह निर्माण करता है। यह संसार वातावरण निर्मिति में सहायक है। शबनम को अपनाये या न अपनाये इसी द्विधावस्था के साथ वह कल्पना करता है कि शबनम दूसरे वर्ग की तितली है और वह उसके वर्ग में नहीं ठहर सकती,अंत में अपने वर्ग में जा मिलेगी।

मंगल के दिवास्वप्नों की दुनिया में हम भी सैर कर आते है क्यों कि यहाँ लेखकने काल्पनिकता में विश्वसनीयता चित्रित की है। मंगल का शबनम तथा उसके पति के बारे में दिवास्वप्न देखता ,उसके माता-पिता उसे छोडकर चले जाते हैं तो उसके सामने चित्र आता है। जैसे --"रेल की पटरियों के किनारे कटी पडी दो लाशें। समुद्र के किनारे आकर लगे हुए दो फूले हुए शव। एक लम्बी सुनसान सडक और एक दूसरे का हाथ थामे घिसटते हुए दम्पति किसी फुटपाथ पर पडे हुए दो भूखे अर्धमृत शरीर।" [२७]

५:५:२:४ नारी की स्वच्छन्दता --

लेखक ने नारी में बढती स्वच्छन्द वृत्ति के उदाहरण अनेक स्त्री पात्रों के माध्यम से दिये हैं। लाजो मध्यवर्गीय पात्र है परन्तु उसका रहन-सहन तथा ऐयाशी की ओर देखने के विचार उच्चवर्ग जैसे लगते हैं, इसीलिए वह अपने पूर्व पति मूलचंद को छोड़कर मंगल के पास आती है। मंगल उसे अपनी धर्म पत्नी मानता है परन्तु वह चंचल है। वह चुपके से अपने पूर्व पति से मिलती रहती है और पति को अपने अधिकार में आते देख उसके पास हमेशा के लिए चली जाती है। उसका माँ का हृदय भी कठोर बन जाता है। इसीलिए बेटी आस्था को वह मंगल के पास छोड़ चली जाती है। और उसका सहारा लेकर मंगल को क्लैकमिल भी करना चाहती है।

दूसरा नारी पात्र है मंगल की माँ जो अपने पूर्वपति को छोड़कर मंगल के पिता की पहली पत्नी को जहर देकर मारती है। मंगल के पिता के बारे में भी गलत अफवायें फैलाकर अपना चरित्र छिपाना चाहती है इसके लिए पूजा-पाठ का सहारा लेती है।

तिसरा पात्र है विजया घोषाल जो एक बड़े इंडस्ट्रीज की बेटी है परन्तु वह भी अपने चरित्र से गिरी हुयी है। शम्पूदा को प्रेमजाल में फँसाकर वह जासूसी करती है, अपने ऐयाशी दोस्तों के साथ बड़े होटल में ड्रींक्स लेती है एवं डान्स करती दिखाई देती है। चौथा स्त्री पात्र है शम्पूदा की पत्नी जो शम्पूदा को छोड़कर मित्र के साथ भाग जाती है।

आजकल नारी के मन में उच्छृंखलता बढ़ रही है। इस वातावरण का चित्रण लेखक ने बड़ी ओजस्वी भाषा में किया है। इन स्त्री पात्रों में कहीं न कहीं फूहड़पन है, अपरिष्कृति है, उच्छृंखलता है। उच्छृंखलता के बारे में वह मंगल कहता है --"उच्छृंखलता की कोई सीमा नहीं होती, कोई अन्त नहीं होता। मैंने देखा है यह हमें कहीं नहीं ले जाता - सिवाय एक अंधेरी खाई के।"[२८]

५:५:२:५ मोह का क्षण --

जीवन में मोह का क्षण आता है, वह या तो आदमी को ऊपर उठाता है या तो नीचे गिराता है। मोह के क्षण का चित्रण हमें कई स्थानोंपर मिलता है। मंगल प्रथमत: शबनम को अपने जीवन की भावना, प्रेरणा, शक्ति मानता है और इनसे सर्वहारा लोगों के लिए काम करने की प्रेरणा लेता है। याने भावनाशील वातावरण में कुछ करने की अपेक्षा करता है। परन्तु लाजो के साथ शारीरिक आकर्षण का एक क्षण मंगल को नीचे गिराता है और मंगल भी यह मान्य करता है --"आज समझता हूँ, भावुकता और शारीरिक आकर्षण का एक दुर्बल क्षण व्यक्ति को कितना नीचे गिरा सकता है।"[२९]

भावना में बह गया मंगल जीवनभर लड़खड़ाता रहता है। उसकी किंमत

जीवनभर उसे चुकानी पड़ती है। नहाना चाहता है लेकिन नहाने से शरीर साफ होगा, मानसिकता नहीं। मंगल कहता है --" एक कमजोर क्षण ने मेरी सारी भावना और पवित्रता पर कालिख पोत दी थी। और सच, कोई-कोई क्षण जीवन में कितना भारी होकर आता है।"[30] वसई की खोली में बिताई वह कमजोर रात का वातावरण मंगल के सामने घूम जाता है और उसे लगता है लाजो को भोगकर उसने उसके भविष्य पर प्रश्न चिह्न लिख दिया है। जैसे --" पुरूष के लिए औरत बहुत बड़ा मोह होती है, शायद सबसे बड़ा आकर्षण भी। लेकिन इस मोह में पड़ते समय यदि थोड़ा-सा रुककर सोच लिया जाये तो जिन्दगी बन सकती है।"[31] इस प्रकार लेखकने मोह के क्षण का वातावरण चित्रित किया है।

५:६ निष्कर्ष --

' प्रिय शबनम ' उपन्यास का कथा-केन्द्र बम्बई महानगर है। महानगरीय समस्याओं का चित्रण करना और मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण करना लेखक का मुख्य उद्देश्य है। महानगरीय चित्रण में लेखक ने आवास की समस्या को चित्रित किया है। बढ़ती आबादी, बढ़ती बेकारी के कारण लोग गाँव छोड़कर देश के हर कोने से बम्बई की ओर आ रहे हैं। इसी कारण जगह की कमी है। आर्थिक अभाव के कारण घर खरीद नहीं सकते, इसी कारण उनको बस्तियों या फूटपाथ पर गुजारा करना पड़ता है। नौकरी या अन्य जीवन विषयक व्यवहार के लिए लोगों को आना-जाना पड़ता है इसी कारण यातायात की समस्या का सामना करना पड़ता है। शहर के लोग ज्यादातर बाहर रहना पसंद करते हैं इसीलिए होटल तथा क्लबों की संख्या बढ़ गई है। उसमें पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है। परिणामस्वरुप महानगरों में एक ' होटल-क्लब संस्कृति ' जन्म ले रही है। शहर में सभी स्तर के लोग रहते है। आर्थिक अभाव मध्य और निम्न वर्ग को मजबूर करता है। इसी कारण अर्थ केन्द्रित रिश्ते बनते जा रहे हैं और संयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं। परिवार में कलह बढ़ता जा रहा है।

लेखक ने महानगरीय वातावरण के साथ कोटद्वार के कस्बे का, वहाँ की पहाडी, प्रकृति का चित्रण किया है। कोटद्वार का सूक्ष्म चित्रण बहुत ही वास्तविक बन पडा है।

लेखक ने बाहरी वातावरण के साथ उपन्यास में मानसिक वातावरण की निर्मिती की है। नायक मंगल की हीनता बोध, कुण्ठित मनोवृत्ति का चित्रण तथा द्विधा मन:स्थिति का चित्रण इस वातावरण से प्रस्तुत हुआ है। उसमें काल्पनिकता, भावनाशीलता के वातावरण का चित्रण मिलता है। ऐसी माताओं से लेखकने परिचित कराया है जो सन्तान के प्रति कठोर हृदयवाली है। तो दुसरी ओर है सन्तान के प्रति ममता रखनेवाले स्त्री-पुरूष। इस प्रकार लेखक ने देश काल तथा वातावरण के अन्तर्गत वर्णनात्मक सूक्ष्मता के साथ विश्वसनियता लायी है और वातावरण के अन्तर्गत बाहरी वातावरण और आन्तरिक या मानसिक वातावरण के उपकरणात्मक सन्तुलन को ध्यान रखते हुये उपन्यासकार ने वातावरण की सृष्टि की है। जो उपन्यास की यथार्थता एवं सार्थकता में सहायक बना है।

सन्दर्भ

			पृष्ठ क्र.
१	देवेश ठाकुर	'प्रिय शबनम'	पृ. १३ ।
२	वही	वही	पृ. १४ ।
३	वही	वही	पृ.८३ ।
४	वही	वही	पृ.१८ ।
५	वही	वही	पृ.१४ ।
६	वही	वही	पृ.१८ ।
७	वही	वही	पृ.१८ ।
८	वही	वही	पृ.७४ ।
९	वही	वही	पृ.४७ ।
१०	वही	वही	पृ.७२ ।
११	वही	वही	पृ.७४ ।
१२	वही	वही	पृ.७१ ।
१३	वही	वही	पृ.७८ ।
१४	वही	वही	पृ.५४ ।
१५	वही	वही	पृ.८०,८३।
१६	वही	वही	पृ.१९ ।
१७	वही	वही	पृ.४७ ।
१८	वही	वही	पृ.५५ ।
१९	वही	वही	पृ.६५।
२०	वही	वही	पृ.६३,६४।
२१	वही	वही	पृ.१९ ।
२२	वही	वही	पृ.७९।
२३	वही	वही	पृ.८३ ।
२४	वही	वही	पृ.०७।
२५	वही	वही	पृ.२९।
२६	वही	वही	पृ.२९।

२७	देवेश ठाकुर	' प्रिय शबनम '	पृ.७०।
२८	वही	वही	पृ.७५ ।
२९	वही	वही	पृ.४१ ।
३०	वही	वही	पृ.६४ ।
३१	वही	वही	पृ.७५,७६ ।